परमात्म ऊर्जा

रूहानी ड्रिल जानते हो? जैसे शारीरिक ड्रिल के अभ्यासी एक सेकण्ड में जहाँ और जैसे अपने शरीर को मोड़ने चाहें वहाँ मोड़ सकते हैं, ऐसे रूहानी ड्रिल करने के अभ्यासी एक सेकण्ड में बुद्धि को जहाँ चाहो, जब चाहो उसी स्टेज पर, उसी परसेन्टेज से स्थित कर सकते हो? ऐसे एवररेडी रूहानी मिलिट्री बने हो? अभी-अभी ऑर्डर हो- अपने सम्पूर्ण निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्टेज पर स्थित हो जाओ; तो क्या स्थित हो सकते हो? व साकार शरीर, साकारी सृष्टि व विकारी संकल्प न चाहते हुए भी अपने तरफ आकर्षित करेंगे? इस देह की आकर्षण से परे एक सेकण्ड में हो सकते हो? हार और जीत का आधार एक सेकण्ड होता है। तो एक सेकण्ड की बाजी जीत सकते हो? ऐसे विजयी अपने आपको समझते हो? ऐसे सर्व शक्तियों के सम्पत्तिवान अपने को समझते हो व अभी तक सम्पूर्ण सम्पत्तिवान बनना है? दाता के बच्चे सदा सर्व सम्पत्तिवान होते हैं, ऐसे अपने को समझते हो व अभी तक 63 जन्मों के भक्तपन व भिखारीपन के संस्कार कब इमर्ज होते हैं? बाप की मदद चाहिए, आशीर्वाद चाहिए, सहयोग चाहिए, शक्ति चाहिए- चाहिए-चाहिए तो नहीं हैं? चाहिए शब्द दाता, विधाता, वरदाता बच्चों के आगे शोभता है? अभी तो विधाता और वरदाता बनकर विश्व की हर आत्मा को कुछ-न-कुछ दान व वरदान देना है, न कि यह चाहिए, यह चाहिए... का संकल्प अभी तक करना है। दाता के बच्चे सर्व शक्तियों से सम्पन्न होते हैं। यही सम्पन्न स्थिति सम्पूर्ण स्थिति को समीप लाती है। अपने को विश्व के अन्दर सर्व आत्माओं से न्यारे और बाप के प्यारे विशेष आत्माएं समझते हो? तो साधारण आत्माएं और विशेष आत्माओं में अन्तर क्या होता है, इस अन्तर को जानते हो? विशेष आत्माओं की विशेषता यही प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देनी चाहिए जो सदा अपने को सर्व शक्तियों से सम्पन्न अनुभव करें। जो गायन है "अप्राप्त नहीं कोई वस्तु"... वह इस समय जब सर्व शक्तियों से अपने को सम्पन्न करेंगे तब ही भविष्य में भी सदा सर्व गुणों से भी सम्पन्न, सर्व पदार्थों से भी सम्पन्न और सम्पूर्ण स्टेज को पा सकेंगे। जो भी अपने में अप्राप्ति अनुभव करते थे, वह प्राप्ति के रुप में परिवर्तन हुए, कि अभी तक भी कोई अप्राप्ति अनुभव करते हो? यह प्राप्ति अविनाशी रहेगी। प्राप्ति अर्थात् प्राप्ति।

जब अनुभव-स्वरूप बन गये तो अनुभव की बातें अविनाशी होती हैं। सुनी हुई बातें, वायुमण्डल के प्रभाव के आधार पर प्राप्त हुई बातें व कोई श्रेष्ठ आत्माओं के सुनने के आधार पर, उस प्रभाव के अंदर प्राप्त हुई बातें अल्पकाल की हो सकती हैं, लेकिन अपने अनुभव की बातें सदाकाल की, अविनाशी होती हैं। तो सुनने वाले बने हो व अनुभवीमूर्त बने हो? कि अभी फिर से सुनी हुई बातों को मनन करने के बाद अनुभवी बनेंगे? मिले हुए खज़ाने को अपने अनुभव में लाया है या वहाँ जाकर फिर लायेंगे? सभी से पॉवरफुल स्टेज है अपना अनुभव-क्योंकि अनुभवी आत्मा में विल-पॉवर होती है। अनुभव के विल-पॉवर से माया की कोई भी पॉवर का सामना कर सकेंगे। जिसमें विल-पॉवर होती है वह सहज ही सर्व बातों का, सर्व समस्याओं का सामना भी कर सकते हैं और सर्व आत्माओं को सदा सन्तुष्ट भी कर सकते हैं। तो सामना करने की शक्ति से सर्व को सन्तुष्ट करने की शक्ति अपने अनुभव के विल-पॉवर से सहज प्राप्त हो जाती है। तो दोनों शक्तियों को अपने अन्दर अनुभव कर रहे हो? अगर दोनों शक्तियां आ गई तो विजयी बनेंगे। ऐसे विजयी बने हो? विजयी अर्थात् स्वप्न में भी संकल्प रूप में हार न हो।

कथा सरिता

अपना-अपना नज़रिया

एक दिन एक अमीर व्यक्ति अपने बेटे को एक गाँव की यात्रा पर ले गया। वह अपने बेटे को यह बताना चाहता था वे कितने अमीर और भाग्यशाली हैं जबकि गाँव के लोग कितने गरीब हैं। उन्होंने कुछ दिन एक गरीब के खेत पर बिताए और फिर अपने घर वापस लौट गए।

घर लौटते वक्त रास्ते में उस अमीर व्यक्ति ने अपने बेटे को पूछा- "तुमने देखा लोग कितने गरीब हैं और वे कैसा जीवन जीते हैं?

बेटे ने कहा- "हाँ, मैंने देखा।"

"हमारे पास एक कुत्ता है और उनके पास चार हैं।"

"हमारे पास एक छोटा-सा स्वीमिंग पुल है और उनके पास एक पूरी नदी है।"

"हमारे पास रात को जलाने के लिए विदेशों से मंगाई हुई कुछ महंगी लालटेन हैं और उनके पास रात को चमकने वाले अरबों तारें हैं।"

"हम अपना खाना बाज़ार से खरीदते हैं जबकि वे अपना खाना खुद अपने खेत में उगाते हैं।"

"हमारा एक छोटा-सा परिवार है जिसमें पाँच लोग हैं, जबकि उनका पूरा गाँव, उनका परिवार है।"

"हमारे पास खुली हवा में घूमने के लिए एक छोटा-सा गार्डन है और उनके पास पूरी धरती है जो कभी समाप्त नहीं होती।"

"हमारी रक्षा करने के लिए हमारे घर के चारों तरफ बड़ी-बड़ी दीवारें हैं और उनकी रक्षा करने के लिए उनके पास अच्छे-अच्छे दोस्त हैं।"

अपने बेटे की बातें सुनकर अमीर व्यक्ति कुछ बोल नहीं पा रहा था। बेटे ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा- "धन्यवाद पिताजी, मुझे यह बताने के लिए कि हम कितने गरीब हैं।"

एक बार लिया गया फैसला छोड़ें नहीं

मोहित एक रनर था, इसका सपना ओलंपिक में जाना था। वह हर मैराथन में हिस्सा लेता था। लेकिन आज तक कोई भी मैराथन पूरा नहीं कर पाया और इस बात पर उसे बहुत अफसोस था। वह खुद में ही खुद से हारने लगा था, पर उसने अभी तक हार नहीं मानी थी, वह कोशिश पे कोशिश किए जा रहा था। हर साल मोहित मैराथन में हिस्सा लेता, पर उसे पूरा नहीं कर पाता था। रोज़ कसरत और दौड़ लगाना शुरू कर दिया और उसने खुद से वादा किया कि इस बार मैं मैराथन ज़रूर पूरा करूँगा। इस फैसले के बाद उसने कड़ी मेहनत भी चालू कर दी और रोज़ कुछ ज़्यादा वह अपनी क्षमता को बढ़ाने लगा। महीनों की मेहनत थी और वो दिन आ गया जिसका मोहित को बेसब्री से इंतज़ार था। हाँ,आप सही सोच रहे हैं- मैराथन। मोहित मैदान पहुंचा और हर बार की भांति इस बार भी होपलेस होने लगा मगर अंदर से आवाज़ आई मैं कर सकता हूँ, आसान है।

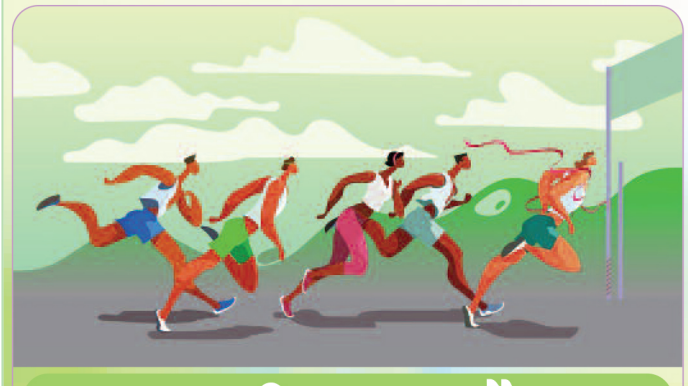

वह मैदान में जाते ही अपने प्रतियोगी को देख होपलेस हो जाता। उनके सामने खुद से खुद की कमी निकालता, खुद में वो भरोसा नहीं रख पाता। लेकिन हर साल की भांति इस साल मैराथन होने पर सिर्फ 2 महीने ही बचे थे। मोहित ने

बाकी सब रनर्स के साथ मोहित ने भी दौड़ना शुरू किया, लेकिन कुछ दूर तक दौड़ लगाने के बाद उसके पैरों में दर्द होने लगा और उसे लगा इस बार भी नहीं हो पाएगा, लेकिन खुद को उसने काबू किया और बोला मोहित अगर दौड़ नहीं पा रहे हो तो जॉगिंग ही कर लो। लेकिन आगे बढ़ो, मोहित ने जॉगिंग करना शुरू किया मतलब पहले के मुकाबले ज़रा मैराथन पूरा करना नामुमकिन-सा लगने लगा। मगर अंदर से आवाज़ आई जॉगिंग नहीं कर पा रहे हो तो चलते हुए रेस पूरा करो। चलते रहो रूको मत मैराथन ज़रूर पूरा करना है और फिर वह चलने लगा।

उसकी काफी धीमी गति हो गई थी। सारे रनर्स उससे एक-एक करते आगे निकलते जा रहे थे और मोहित उन्हें आगे निकलते हुए देखने के अलावा कुछ भी नहीं कर पा रहा था। तभी अचानक लड़खड़ा कर वो ज़मीन पर गिर पड़ा। ज़मीन पर पड़े-पड़े उसके दिमाग में ख्याल आने लगा कि इस बार भी मैं मैराथन पूरा नहीं कर पाया। तभी मोहित के अंदर से आवाज़ आई, जिसने कहा उठो मोहित चल नहीं पा रहे थे तो लड़खड़ाते हुए फिनिश लाइन को पार कर लो। फिनिश लाइन अब बहुत सामने है। मोहित लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा और फिनिश लाइन को किसी तरह पार कर लिया। और जो खुशी, जो संतुष्टि उसने महसूस की वो इससे पहले उसने कभी नहीं की थी।

शिक्षा : किसी भी काम को करने से पहले हज़ार बार सोचिए, लेकिन जब एक बार फैसला ले लिया हो तो उसे पूरा करके ही छोड़ना।